"बौद्ध दर्शन के महायान संप्रदाय में जगत कल्याण की अवधारणा"
(वर्तमान वैश्वीकरण के विशेष संदर्भ में)

दर्शनशास्त्र विभाग (मानविकी संकाय) राँची विश्वविद्यालय में पीएच. डी उपाधि हेतु प्रस्तुत शोध-प्रस्ताव

2025

शोध निर्देशक

डॉ. अजय कुमार सिंह
विभागाध्यक्ष एवं सह प्राध्यापक
दर्शनशास्त्र विभाग
राँची विश्वविद्यालय, राँची

शोधार्थी

चन्द्र मौलि सिंह
UGC-NET, JRF

“बौद्ध दर्शन के महायान संप्रदाय में जगत कल्याण की अवधारणा”

(वर्तमान वैश्वीकरण के विशेष संदर्भ में)

विषय प्रवेश:

चौथी बौद्ध संगीति लगभग 72 ईस्वी में कश्मीर के कुंडलवन में आयोजित की गई थी जिसमें बौद्ध धर्म स्पष्ट रूप से दो संप्रदायों हीनयान और महायान में विभक्त हो गया। इस संगति में महायान के सिद्धांतों को अंतिम रूप दिया गया। यह हीनयान से भिन्न एक उदार और व्यापक मार्ग है। इसमें बोधिसत्त्व को आदर्श माना गया है, जो स्वयं निर्वाण प्राप्त करने के बजाय सब प्राणियों की मुक्ति के लिए कार्य करता है। महायान में करुणा और प्रज्ञा को साधना का मूल माना गया है। इस संप्रदाय में अनेक बुद्धों और बोधिसत्त्वों की कल्पना की गई है, जैसे अवलोकितेश्वर, मंजुश्री और अमिताभ। इसका उद्देश्य सभी प्राणियों की मुक्ति है, न कि केवल भिक्षुओं की। महायान साहित्य में प्रज्ञापारमिता, सद्दर्मपुण्डरीक और विमलकीर्ति सूत्र प्रमुख हैं। यह संप्रदाय करुणा, सहयोग और ज्ञान की राह है।

इस शोध कार्य के प्रतिपाद्य विषय "बौद्ध दर्शन के महायान संप्रदाय में जगत कल्याण की अवधारणा"(वर्तमान वैश्वीकरण के विशेष संदर्भ में) का चयन मेरी व्यक्तिगत जिज्ञासा एवं अभिलाषा से प्रभावित है। मैंने महसूस किया कि आज हम जिस जगत में निवास कर रहे हैं, वहां पारिस्थितिकी विनाश अपने चरमोत्कर्ष पर है, आचारहीनता तथा परस्पर अन्तर्राष्ट्रीय संवादहीनता है जिसके परिणामस्वरूप पूरे विश्व को प्रतिफलन के रूप में कष्ट, अशांति, कलह, असंतोष, ईर्ष्या-द्वेष, असहिष्णुता, असंवेदनशीलता, घृणा, असद्भावना आदि मिल रही है।

बौद्ध दर्शन भारतीय साहित्य एवं संस्कृति का वह मूल्यवान बौद्धिक, नैतिक एवं सामाजिक तथा मानवतावादी जीवन पक्ष है जो सम्पूर्ण मानवता को अतीत की भाँति आज भी अर्न्तदृष्टि प्रदान करता है। अतः बौद्ध दर्शन व्यक्ति की आध्यात्मिक उन्नति के साथ-साथ उसे शुद्ध चित्त, विकार रहित शरीर व स्वास्थ्यप्रद वातावरणयुक्त जीवन पद्धति प्रदान करता है। दूसरे को हानि न पहुंचाना ही बुद्ध का दर्शन है। आज विश्व में हिंसा और सामाजिक भेदभाव बढ़ रहा है। मनुष्य विचारों से हिंसात्मक होता जा रहा है। व्यक्ति के विनाशकारी विचारों को बदलना और उन पर नियंत्रण रखना बहुत जरूरी है। इसलिए मानव की गलत प्रवृत्तियों को नियंत्रित करने के लिए उसके मन में सद् विचारों का प्रवाह कर उसे सद् मार्ग पर ले जाना जरूरी है। उन्होंने यह सद् मार्ग बौद्ध दर्शन के रूप में दिया था। अतः आज मानव मात्र की कुप्रवृत्तियों, जैसे-हिंसा, शत्रुता, द्वेष, लोभ आदि से मुक्ति पाने के लिए बौद्ध दर्शन को समझने की जरूरत है।

महायान संप्रदाय की सबसे प्रमुख विशेषता बोधिसत्व की संकल्पना को साकार रूप देना है। महायान मत के अंतर्गत प्रत्येक व्यक्ति के जीवन का परम लक्ष्य बोधिसत्व अवस्था की प्राप्ति है। बोधिसत्व का अर्थ है ज्ञान प्राप्त करने की इच्छा रखने वाला व्यक्ति। परंतु महायान में बोधिसत्व का अर्थ वह व्यक्ति है जो ज्ञान प्राप्ति करता है अर्थात् बोधि को प्राप्त करता है एवं लोक कल्याण में संलग्न हो जाता है। महायान संप्रदाय ने बोधिसत्व की संकल्पना से आगे बढ़कर बुद्ध को ईश्वर के रूप में स्थापित कर दिया एवं बुद्ध को ईश्वर मानकर सबके कल्याण हेतु उपासना करना प्रारंभ कर दिया। महायान में बोधिसत्व को ज्ञान, करुणा एवं प्रेम का मूर्त रूप माना जाता है। इसलिए प्रत्येक व्यक्ति स्नेह, निष्ठा एवं शुद्ध व्यवहार के द्वारा ईश्वर की कृपा का पात्र बन सकता है। महायान में ईश्वर की भक्ति एवं पूजा के साथ-साथ बुद्ध के अवतारों की भी संकल्पना प्रतिपादित की गई।

बौद्ध दर्शन के महायान सम्प्रदाय में कुछ ऐसे तत्वों की चर्चा है जो उस युग की अपेक्षा आज अधिक समीचीन एवं प्रासंगिक प्रतीत होते हैं। बौद्ध दर्शन में, जगत कल्याण उसके तत्वमीमांसीय,

ज्ञानमीमांसीय एवं नीतिशास्त्रीय विचार से अनुमित किया जा सकता है। यदि जगत कल्याण को पाना है तो बौद्ध दर्शन के समग्रतावादी दृष्टिकोण का अनुपालन वांछनीय है। इस दर्शन का सम्यक् अध्ययन विश्व की समस्या के समाधान में अत्यंत सहायक सिद्ध हो सकता है क्योंकि इसके अन्तर्गत प्रतीत्यसमुत्पाद के सिद्धांत, कर्म सिद्धांत, मध्यम मार्ग, अष्टांगिक मार्ग एवं निर्वाणादि की विस्तृत विवेचना एवं समीक्षा की गई है।

अनुसंधान का विषय:

बौद्ध दर्शन, विशेष रूप से महायान संप्रदाय, करुणा, प्रज्ञा और सभी प्राणियों के कल्याण पर अत्यधिक जोर देता है। वर्तमान वैश्वीकरण के युग में, जहां दुनिया अभूतपूर्व रूप से आपस में जुड़ी हुई है, लेकिन साथ ही सामाजिक, आर्थिक और पर्यावरणीय असमानताएं भी बढ़ रही हैं, बौद्ध दर्शन के जगत कल्याण के सिद्धांतों का अध्ययन अत्यंत महत्वपूर्ण हो जाता है। यह शोध इस बात की पड़ताल करेगा कि महायान बौद्ध दर्शन की शिक्षाएं वैश्विक चुनौतियों का समाधान करने, अधिक न्यायसंगत और शांतिपूर्ण विश्व के निर्माण में कैसे योगदान कर सकती हैं।

संभावित अनुसंधान विधियां:

- **ग्रंथों का अध्ययन:** महायान बौद्ध दर्शन के प्रमुख सूत्रों, शास्त्रों और टीकाओं का गहन अध्ययन करना।
- **साहित्य समीक्षा:** इस विषय पर पहले से मौजूद विद्वानों के शोध और लेखों का अध्ययन करना।
- **दार्शनिक विश्लेषण:** बौद्ध दर्शन के प्रमुख अवधारणाओं (जैसे शून्यता, अनात्म, करुणा, प्रज्ञा) का आलोचनात्मक विश्लेषण करना और उन्हें जगत कल्याण की अवधारणा से जोड़ना।

- **तुलनात्मक अध्ययन:** महायान बौद्ध दर्शन के जगत कल्याण के सिद्धांतों की अन्य धार्मिक और दार्शनिक परंपराओं के साथ तुलना करना।
- **क्षेत्रीय कार्य (वैकल्पिक):** बौद्ध मठों, समुदायों और बौद्ध भिक्खू के साथ साक्षात्कार करना।

अनुसंधान के संभावित प्रश्न-

- ➢ महायान बौद्ध दर्शन में जगत कल्याण की अवधारणा के मूल सिद्धांत क्या हैं? इसमें बोधिसत्व की भूमिका क्या है?
- ➢ महायान ग्रंथों (जैसे सद्धर्मपुण्डरीक सूत्र, अवतंसक सूत्र, आदि) में जगत कल्याण की अवधारणा को किस प्रकार प्रस्तुत किया गया है?
- ➢ वर्तमान वैश्वीकरण की प्रमुख विशेषताएं क्या हैं (जैसे आर्थिक अंतर्संबंध, सांस्कृतिक आदान-प्रदान, तकनीकी प्रगति, पर्यावरणीय मुद्दे, सामाजिक असमानता)?
- ➢ महायान बौद्ध दर्शन के जगत कल्याण के सिद्धांत वैश्वीकरण की इन विशेषताओं से किस प्रकार संबंधित हैं? क्या वे इसका समर्थन करते हैं, आलोचना करते हैं, या एक वैकल्पिक दृष्टिकोण प्रस्तुत करते हैं?
- ➢ महायान बौद्ध दर्शन के करुणा और प्रज्ञा के सिद्धांतों को वर्तमान वैश्विक समस्याओं (जैसे गरीबी, जलवायु परिवर्तन, संघर्ष, महामारी) के समाधान के लिए कैसे लागू किया जा सकता है?
- ➢ क्या समकालीन बौद्ध विद्वानों और चिकित्सकों ने वैश्वीकरण के संदर्भ में जगत कल्याण की अवधारणा की व्याख्या और अनुप्रयोग किया है? यदि हां, तो उनके मुख्य तर्क क्या हैं?
- ➢ महायान बौद्ध दर्शन के सिद्धांतों को वैश्विक स्तर पर सामाजिक न्याय, मानवाधिकार और सतत विकास को बढ़ावा देने के लिए किया जा सकता है?

- वर्तमान वैश्वीकरण के संदर्भ में महायान बौद्ध दर्शन के जगत कल्याण के आदर्शों को प्राप्त करने में आने वाली चुनौतियां क्या हैं?

अनुसंधान की समस्या:

वर्तमान वैश्वीकरण की चुनौतियों के संदर्भ में यह अस्पष्ट है कि बौद्ध दर्शन का महायान संप्रदाय, जो करुणा और जगत-कल्याण की बात करता है, किस हद तक आज की जटिल वैश्विक परिस्थितियों में प्रभावशाली, प्रासंगिक और व्यावहारिक सिद्ध हो सकता है। इसी असमंजस को स्पष्ट करना और उसके उत्तर खोजना इस शोध की मूल अनुसंधान समस्या है।

महायान बौद्ध दर्शन की जगत कल्याण की अवधारणा—जिसका केंद्र बिंदु बोधिसत्त्व मार्ग, करुणा और सर्व प्राणियों की मुक्ति की भावना है—ऐसे ही एक समग्र दृष्टिकोण का परिचायक है। परंतु आज की वैश्वीकृत दुनिया में यह अवधारणा कितनी प्रासंगिक है? क्या यह दर्शन केवल आध्यात्मिक साधना तक सीमित है, या यह सामाजिक एवं वैश्विक समस्याओं का व्यावहारिक समाधान भी प्रस्तुत करता है?

अनुसंधान की समस्या निम्नलिखित पहलुओं पर केंद्रित है:

1. महायान बौद्ध दर्शन में जगत कल्याण की अवधारणा का दार्शनिक आधार क्या है?
    - शून्यता (शून्यता), अनात्म (आत्म-शून्यता), और प्रतीत्यसमुत्पाद (सह-उत्पत्ति) जैसे प्रमुख सिद्धांतों का जगत कल्याण की अवधारणा पर क्या प्रभाव पड़ता है?
    - करुणा (करुणा), मुदिता (सहानुभूतिपूर्ण आनंद), उपेक्षा (समता), और मैत्री (प्रेमपूर्ण दया) जैसे ब्रह्मविहारों की भूमिका क्या है?

- बोधिसत्व के आदर्श और उनके प्रण (प्रतिज्ञा) जगत कल्याण की प्रेरणा और दिशा को कैसे निर्धारित करते हैं?

2. वर्तमान वैश्वीकरण के संदर्भ में जगत कल्याण की पारंपरिक महायान अवधारणा कितनी प्रासंगिक है?
    - वैश्वीकरण के सकारात्मक और नकारात्मक पहलुओं (जैसे सांस्कृतिक आदान-प्रदान बनाम आर्थिक असमानता, तकनीकी प्रगति बनाम पर्यावरणीय क्षरण) को ध्यान में रखते हुए, महायान के सिद्धांतों को समकालीन चुनौतियों का समाधान करने के लिए कैसे अनुकूलित किया जा सकता है?
    - अंतर्राष्ट्रीय संबंध, मानवाधिकार, गरीबी उन्मूलन, जलवायु परिवर्तन और महामारी जैसी वैश्विक समस्याओं के प्रति महायान का दृष्टिकोण क्या हो सकता है?
3. महायान बौद्ध दर्शन के अनुयायी वर्तमान वैश्वीकृत दुनिया में जगत कल्याण की अवधारणा को व्यवहार में कैसे ला रहे हैं?
    - विभिन्न बौद्ध संगठनों और व्यक्तियों द्वारा किए जा रहे सामाजिक रूप से संलग्न बौद्ध दर्शन के प्रयासों का विश्लेषण करना।
    - शिक्षा, स्वास्थ्य सेवा, पर्यावरण संरक्षण, और सामाजिक न्याय के क्षेत्रों में बौद्ध दर्शन आधारित पहल का मूल्यांकन करना।

अनुसंधान का उद्देश्य एवं मुख्य बिन्दु:

इस शोध का मुख्य उद्देश्य वर्तमान वैश्वीकरण के विशेष संदर्भ में बौद्ध दर्शन के महायान संप्रदाय में जगत कल्याण की अवधारणा का आलोचनात्मक विश्लेषण करना है। यह शोध इस अवधारणा के

दार्शनिक आधार, वर्तमान वैश्विक चुनौतियों के प्रति इसकी प्रासंगिकता, इसके व्यावहारिक अनुप्रयोग और इसके कार्यान्वयन में आने वाली चुनौतियों की पड़ताल करेगा।

अनुसंधान के मुख्य उद्देश्य निम्नलिखित हैं:

I. महायान बौद्ध दर्शन में जगत कल्याण की अवधारणा के दार्शनिक आधार की गहन पड़ताल करना:

   a. शून्यता, अनात्म, प्रतीत्यसमुत्पाद जैसे मूलभूत सिद्धांतों और करुणा, मुदिता, उपेक्षा, मैत्री जैसे ब्रह्मविहारों के संदर्भ में जगत कल्याण की अवधारणा को समझना।

   b. बोधिसत्व के आदर्श और उनके प्रणों की जगत कल्याण की प्रेरणा और दिशा निर्धारण में भूमिका का विश्लेषण करना।

II. वर्तमान वैश्वीकरण के संदर्भ में जगत कल्याण की पारंपरिक महायान अवधारणा की प्रासंगिकता का मूल्यांकन करना:

   a. वैश्वीकरण के सकारात्मक (जैसे सांस्कृतिक आदान-प्रदान, तकनीकी प्रगति) और नकारात्मक (जैसे आर्थिक असमानता, पर्यावरणीय क्षरण, सांस्कृतिक समरूपता) पहलुओं का विश्लेषण करना।

   b. यह जांचना कि महायान के नैतिक और दार्शनिक सिद्धांत वर्तमान वैश्विक चुनौतियों का समाधान करने के लिए किस प्रकार प्रासंगिक हो सकते हैं।

III. वर्तमान वैश्वीकृत दुनिया में जगत कल्याण की महायान अवधारणा के व्यावहारिक अनुप्रयोगों का अध्ययन करना:

   a. सामाजिक रूप से संलग्न बौद्ध दर्शन के विभिन्न रूपों और पहलों की पहचान और विश्लेषण करना।

   b. शिक्षा, स्वास्थ्य सेवा, पर्यावरण संरक्षण, सामाजिक न्याय और शांति निर्माण के क्षेत्रों में बौद्ध दर्शन आधारित संगठनों और व्यक्तियों के योगदान का मूल्यांकन करना।

IV. जगत कल्याण की महायान अवधारणा के कार्यान्वयन में आने वाली चुनौतियों की पहचान करना और उनका विश्लेषण करना:

a. विभिन्न सांस्कृतिक, राजनीतिक और आर्थिक संदर्भों में महायान मूल्यों को प्रभावी ढंग से लागू करने में आने वाली व्यावहारिक कठिनाइयों का विश्लेषण करना।

b. धर्मनिरपेक्षता, भौतिकवाद और उपभोक्तावाद के बढ़ते प्रभाव के संदर्भ में बौद्ध दर्शन के जगत कल्याण के संदेश की प्रासंगिकता को बनाए रखने की चुनौतियों पर विचार करना।

अनुसंधान के मुख्य बिन्दु:

- महायान बौद्ध दर्शन में जगत कल्याण शब्द की सटीक परिभाषा और इसके विभिन्न आयाम।
- वैश्वीकरण की प्रक्रिया का महायान बौद्ध दर्शन के नैतिक और सामाजिक विचारों पर संभावित प्रभाव।
- विभिन्न महायान बौद्ध परंपराओं (जैसे थेरवाद से तुलनात्मक अध्ययन) में जगत कल्याण की अवधारणा में समानताएं और अंतर।
- जगत कल्याण की महायान अवधारणा के माध्यम से एक अधिक न्यायसंगत, शांतिपूर्ण और वैश्विक समाज के निर्माण की संभावनाएं।

संक्षेप में, इस शोध का उद्देश्य यह समझना है कि महायान बौद्ध दर्शन की जगत कल्याण की गहन अवधारणा वर्तमान वैश्वीकरण के संदर्भ में कितनी सार्थक और प्रभावी है, और यह वैश्विक चुनौतियों का समाधान करने और एक बेहतर भविष्य के निर्माण में कैसे योगदान दे सकती है।

विश्व स्तर पर पनप रहे सामाजिक असंतुलन, नैतिक पतन, पर्यावरणीय अवनयन, आतंकवाद, भ्रष्टाचार, ईर्ष्या द्वेष आदि को समाप्त कर एक स्वस्थ एवं लोक मंगलकारी समाज बनाने के उद्देश्य से महात्मा बुद्ध के उपदेश आज भी सक्षम एवं कारगर है। आज का मानव वर्तमान समय

में रक्षक की बजाय भक्षक न बन पाये, इसके लिए हमें बौद्ध दर्शन के महायान सम्प्रदाय के सिद्धांतों व उपदेशों का अनुसरण करना ही होगा, जिससे व्यक्ति के बुद्धि, विचार, आचरण में सकारात्मक परिवर्त्तन हो सके। इससे समाज में एकता, समानता, स्वतंत्रता, मैत्री, न्याय स्थायी शांति एवं विश्व बंधुत्व के 'वसुधैव कुटुम्बकम्' की भावना साकार हो सकती है।

अनुसंधान की परिकल्पना

किसी भी सिद्धांत के प्रणयन में परिकल्पना का महत्वपूर्ण योगदान होता है। हम जिस सिद्धांत या विचार का प्रणयन कर रहे है, उसके भविष्यगामी प्रभाव का कुछ अनुमान परिकल्पना के द्वारा करते हैं। मेरा प्रतिपाद्य विषय बौद्ध दर्शन में जगत कल्याण से संबंधित है इसलिए हम बौद्ध दर्शन में चर्चित जगत कल्याण की समस्यां पर विचार करते हुए यह दिखलाने की चेष्टा करेंगे कि आधुनिक वैश्वीकरण के युग में जगत कल्याण की जो समस्या है उसे बौद्ध दर्शन के माध्यम से, कैसे उपयुक्त समाधान प्रस्तुत किया जाय।

अनुसंधान का प्रारूप एवं अध्ययन पद्धति

यह शोध कार्य संबंधित सहायक ग्रंथों पर आधारित होगा । इस शोध कार्य के लिए मुख्यतः पुस्तकावलोकन विधि की सहायता ली जाएगी और यहाँ शोध के लिए विश्लेषणात्मक एवं तुलनात्मक पद्धति का प्रयोग कर सामान्य निष्कर्षों की प्राप्ति का प्रयास किया जाएगा । यह शोध मुख्य रूप से एक शुद्ध शोध होगा परन्तु शोध के सैद्धांतिक पहलू के साथ व्यावहारिक पहलू पर भी विचार किया जाएगा।

अनुसंधान सम्बन्धित तथ्य संकलन:

अनुसंधान संबंधी तथ्य संकलन के लिए शोधकर्ता मुख्य रूप से प्राथमिक और द्वितीय स्रोत पर निर्भर करता है। विभिन्न पुस्तकालयों का भ्रमण किया जाएगा और उन पुस्तकालयों में उपलब्ध बौद्ध से संबंधित मूल एवं सहायक ग्रन्थों का अध्ययन कर सामग्री एकत्रित की जाएगी। कुछ राष्ट्रीय-अंतरराष्ट्रीय स्तरीय पत्र पत्रिकाओं जैसे दार्शनिक त्रैमासिक, दार्शनिकी, दार्शनिक अनुगूंज, जेस्टोर, स्कोपस, डेलनेट, नेशनल डिजिटल लाइब्रेरी, ई. कंटेंट, शोधगंगा आदि की सहायता से विषय से संबंधित प्रमुख चिंतकों एवं विद्वानों के विचारों का अध्ययन किया जाएगा तथा उनके लेखों और शोध प्रबंधों की सहायता ली जाएगी।

अनुसंधान संबंधी तथ्य का विश्लेषणः

तथ्य का विश्लेषण की प्रक्रिया के लिए शोधकर्ता द्वारा तथ्य का विश्लेषण की तीन प्रक्रियाओं का उपयोग किया जाएगा। पहलाः विभिन्न स्रोतों से तथ्यों का संगठन और मूल्यांकन किया जाएगा, दूसराः सारांशीकरण और वर्गीकरण किया जाएगा एवं तीसरी और अंतिम प्रक्रिया में तथ्य का विश्लेषण किया जाएगा।

अनुसंधान विषय का वर्तमान में महत्व एवं प्रासंगिकता:

यह शोध वर्तमान वैश्वीकरण के जटिल परिदृश्य में बौद्ध दर्शन के महायान संप्रदाय की नैतिक और सामाजिक प्रासंगिकता पर महत्वपूर्ण अंतर्दृष्टि प्रदान करेगा। यह न केवल महायान बौद्ध दर्शन के

विद्वानों के लिए मूल्यवान होगा, बल्कि नीति निर्माताओं, सामाजिक कार्यकर्ताओं और उन सभी लोगों के लिए भी उपयोगी होगा जो वैश्विक चुनौतियों का समाधान करने के लिए नैतिक और आध्यात्मिक मार्गदर्शन की तलाश कर रहे हैं।

महायान बौद्ध दर्शन की "जगत कल्याण" की अवधारणा आज के वैश्वीकृत विश्व के लिए अत्यंत प्रासंगिक है। यह हमें हमारी साझा मानवता और अंतर्निर्भरता की याद दिलाती है, वैश्विक चुनौतियों का सामना करने के लिए करुणा, सहयोग और सार्वभौमिक जिम्मेदारी का मार्ग दिखाती है, और एक अधिक न्यायपूर्ण, शांतिपूर्ण और धारणीय विश्व के निर्माण के लिए एक शक्तिशाली नैतिक और दार्शनिक आधार प्रदान करती है। इस प्रकार, यह अनुसंधान विषय न केवल अकादमिक रूप से महत्वपूर्ण है, बल्कि समकालीन वैश्विक समाज की ज्वलंत समस्याओं के समाधान की दृष्टि से भी अत्यधिक प्रासंगिक है।

वर्तमान ज्ञान में अनुसंधान विषय का योगदान:

यह शोध विषय बौद्ध दर्शन के महायान संप्रदाय में निहित जगत कल्याण की गहन अवधारणा की पड़ताल करके और वर्तमान वैश्वीकरण के संदर्भ में इसकी प्रासंगिकता का विश्लेषण करके वर्तमान ज्ञान में महत्वपूर्ण योगदान दे सकता है। यह न केवल बौद्ध दार्शनिक अध्ययन को समृद्ध करेगा बल्कि वैश्विक नैतिकता, सामाजिक और राजनीतिक दर्शन, पर्यावरण दर्शन, अंतर-सांस्कृतिक संवाद और कल्याण अध्ययन के क्षेत्रों में नई अंतर्दृष्टि और व्यावहारिक समाधान भी प्रदान करेगा। यह शोध दुनिया को अधिक न्यायपूर्ण, शांतिपूर्ण बनाने के प्रयासों में बौद्ध ज्ञान की महत्वपूर्ण भूमिका को उजागर करने में सहायक होगा।

अनुसंधान विषय पर भविष्य में कार्य होने की संभावना:

यह शोध विषय वर्तमान समय में इतना सारगर्भित है कि इस विषय में शोध कार्य का विषय हमेशा ही महत्वपूर्ण रहेगा। यह विषय वैश्विक नैतिकता, पर्यावरणीय संकट, सामाजिक न्याय, मानसिक स्वास्थ्य और अंतरधार्मिक संवाद जैसे **समकालीन एवं भविष्य के प्रमुख मुद्दों** को संबोधित करता है। अतः यह विषय भविष्य में न केवल धार्मिक और दार्शनिक अनुसंधान का क्षेत्र रहेगा, बल्कि *Applied Buddhism* के रूप में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा।

संभावित अध्याय

भूमिका

प्रथम अध्याय: बौद्ध दर्शन में महायान संप्रदाय का स्थान।

द्वितीय अध्याय: महायान संप्रदाय में बोधिसत्त्व की अवधारणा तथा त्रिकाय अथवा बौद्धत्रयी की अवधारणा।

तृतीय अध्याय: बौद्ध दर्शन के महायान संप्रदाय में नीतिशास्त्रीय अवधारणा।

चतुर्थ अध्याय: महायान एवं हीनयान दार्शनिक चिंतन का तुलनात्मक नीतिशास्त्रीय, सम्यकरूपेण विश्लेषण।

पंचम अध्याय: वर्तमान विश्व में वैश्वीकरण और नीतिशून्यता का सम्यकरूपेण अध्ययन।

षष्टम् अध्याय: वर्तमान विश्व में महायान बौद्ध संप्रदाय के दार्शनिक विचारों की उपादेयता।

निष्कर्ष

सहायक ग्रंथसूची

1. पाण्डेय, अजय कुमार, *बौद्ध संस्कृति के विविध आयाम*, प्रतिभा प्रकाशन, नई दिल्ली, 2006
2. जैन, जिनेन्द्र, *जैनविद्या एवं बौद्ध अध्ययन के आयाम*, राधा पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली, 2004
3. उपाध्याय, बलदवे, *बौद्ध मीमांसा*, चौखम्बा विद्याभवन, बनारस, 1954
4. बापट, पी०वी०, बौद्ध दर्शन के 2500 वर्ष, सूचना और प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली, 1956
5. पाण्डेय, गोविंदचंद, *बौद्ध दर्शन के विकास का इतिहास*, उत्तरप्रदेश हिन्दी सस्थान, लखनऊ, 1963
6. नरेन्द्रदेव, *बौद्ध दशर्न*, मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली, 1956
7. गुप्त, परमेश्वरीलाल, *प्राचीन भारत के प्रमुख अभिलेख, प्रथमभाग*, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी, 2011
8. पाण्डेय, अजय कुमार, *बौद्ध संस्कृति के विविध आयाम*, प्रतिभा प्रकाशन, नई दिल्ली, 2006
9. जैन, जिनेन्द्र, *जैनविद्या एवं बौद्ध अध्ययन के आयाम*, राधा पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली, 2004, पृ. 363.
10. शर्मा, डॉ० चन्द्रधर, *बौद्ध दर्शन और वेदान्त*, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी,1949
11. सिन्हा, हरेन्द्रप्रसाद, *भारतीय दर्शन की रूपरेखा*, मोतीलाल बनारसीदास, वाराणसी, 1963
12. दासगुप्ता, डॉ० एस० एन०, *भारतीय दर्शन का इतिहास*, भाग-1, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर, 1988
13. सिन्हा, डॉ० जदुनाथ, *भारतीय दर्शन*, मोतीलाल बनारसीदास, वाराणसी, 2000